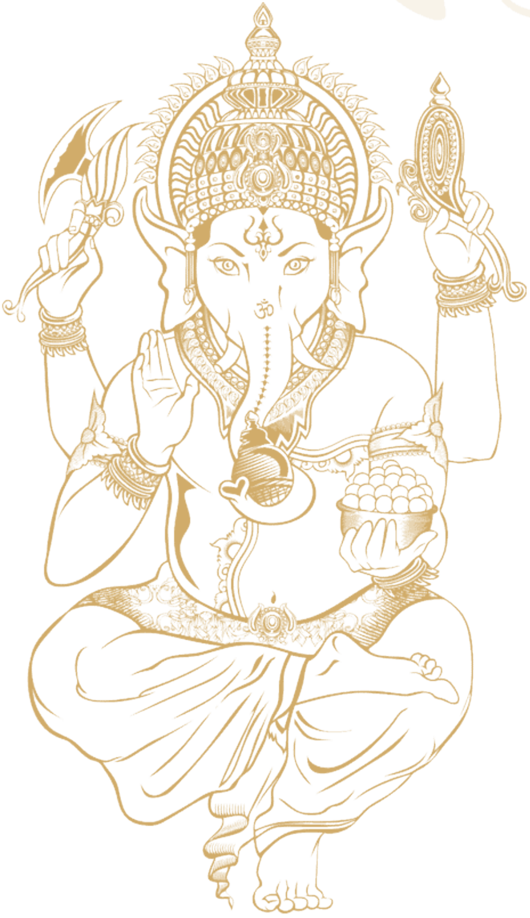

03 Dec 2025

06:37 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120569601

तिथि 03/12/2025 **समय** 06:37:00 **वार** बुधवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:12
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	11:04:21 घं
वेलान्तर	00:10:11 घं
सूर्योदय	06:57:32 घं
सूर्यास्त	17:23:44 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	मार्गशीर्ष
पक्ष	शुक्ल
तिथि	13
नक्षत्र	भरणी
योग	परिघ
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	गज
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	लू-लूसी
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-स्वर्ण
होरा	शनि
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

शुक्र 10वर्ष 9मा 20दि

शुक्र

03/12/2025

23/09/2036

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	03/12/2025
राहु	23/11/2026
गुरु	24/07/2029
शनि	23/09/2032
बुध	25/07/2035
केतु	23/09/2036

योगिनी

भद्रिका 2वर्ष 8मा 12दि

भद्रिका

03/12/2025

15/08/2028

	00/00/0000
	03/12/2025
सिद्धा	14/02/2026
संकटा	27/03/2027
मंगला	17/05/2027
पिंगला	26/08/2027
धान्या	26/01/2028
भ्रामरी	15/08/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			11:29:59	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	चंद्र	---	0:00			
सूर्य			16:53:37	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	बुध	मित्र राशि	1.21	मातृ	पितृ	मित्र
चंद्र			19:27:46	मेष	भरणी	2	शुक्र	राहु	सम राशि	1.10	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	26:35:39	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	गुरु	स्वराशि	1.46	अमात्य	भ्रातृ	मित्र
बुध			27:23:19	तुला	विशाखा	3	गुरु	शुक्र	मित्र राशि	1.27	आत्मा	ज्ञाति	साधक
गुरु	व		00:10:44	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	चंद्र	उच्च राशि	1.31	कलत्र	धन	साधक
शुक्र			08:33:03	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	शुक्र	सम राशि	1.30	पुत्र	कलत्र	वध
शनि			00:57:32	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	0.81	ज्ञाति	आयु	साधक
राहु	व		19:50:57	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	मंगल	मित्र राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु	व		19:50:57	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	जन्म

लग्न-चलित

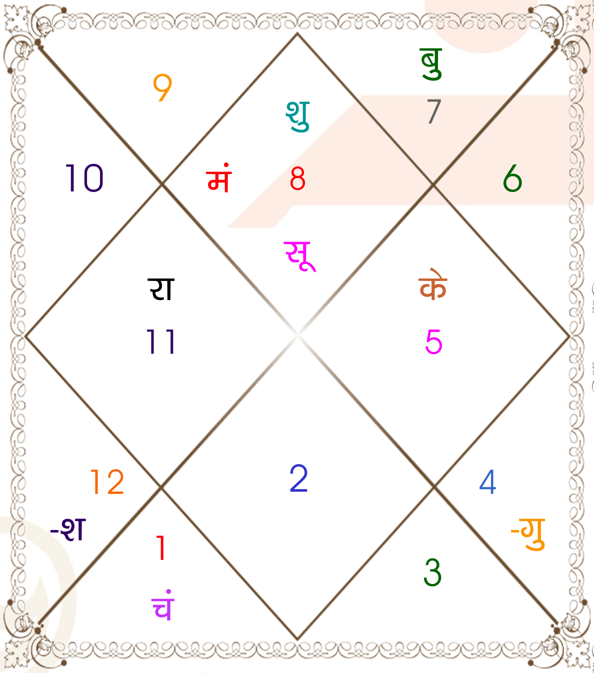

चन्द्र कुंडली

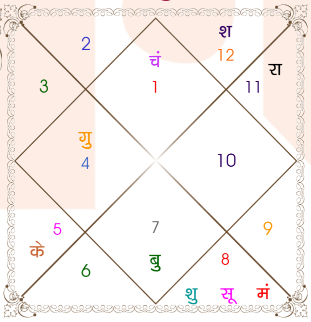

नवमांश कुंडली

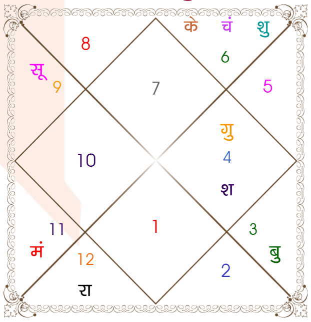

सर्वाष्टकवर्ग

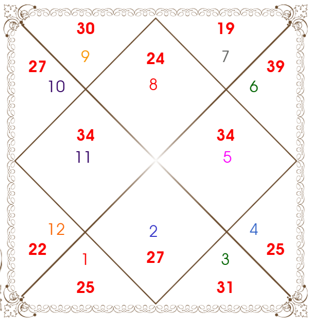

दशमांश कुंडली

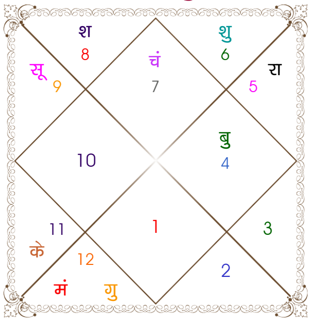

भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र

पं गोकुल चंद शर्मा

मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा

9312257830

नक्षत्रफल

आपका जन्म भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल होगा। आपकी योनि गज,गण मनुष्य, नाडी मध्य, वर्ण क्षत्रिय तथा वर्ग मृग होगा। भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आपका जन्म नाम "लु" या "लू" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

इस नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न होने के कारण मनोरंजन के कार्यक्रम संगीत, नृत्य, सिनेमा तथा खेलों के प्रति आपका विशेष आकर्षण रहेगा तथा इसी पर अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगी। आप जल से भयभीत भी रहेंगी। प्रकृति आपकी चंचल होगी तथा अन्य सामाजिक जनों से व्यवहार भी सामान्य होगा।

सदापकीर्ति र्हि महापवादैर्नाना विनोदैश्च विनीतकालः।
जलातिभीरूश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतोभरणीजातः।।
जातकाभरणम्

अर्थात भरणी में उत्पन्न जातक लोकोपवाद से अपयश पाने वाला, अपने समय को नाना प्रकार के खेल या विनोद द्वारा व्यतीत करता है। यह जल से भीरू, चंचल प्रवृति तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आप अपने निश्चय की पक्की होंगी जिस चीज या कार्य के बारे में एक बार सोच लेगी उसे पूर्ण रूप से प्राप्त करके या पूर्ण करके ही छोड़ेगी। आप सत्य बोलेंगी तथा सत्य का अनुपालन करेंगी। आपका शरीर सामान्य रूप से स्वस्थ रहेगा तथा रोगों का अभाव रहेगा। आपकी कार्यशैली चतुराई से भरी होगी तथा आपका सामान्य जीवन सर्वसुखों से युक्त होकर व्यतीत होगा।

कृत निश्चयः सत्यारुग्दक्षः सुखितश्च भरणीषु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् भरणी नक्षत्र में जन्मा जातक सत्यवक्ता, बात का पक्का, रोगरहित और कार्यकलाप में चतुर होता है।

कभी कभी आपका स्वभाव जिदद्ी बन जाएगा जिससे अन्य जनों को परेशानी होगी क्योंकि जिस हठ को पकड़ेंगी उसे पूर्ण करके ही छोडेगी। धन का आप आजीवन उपभोग करेंगी तथा इसका कोई अभाव नहीं रहेगा। आपका शरीर सामान्य रूप से स्वस्थ रहेगा तथा आपकी मुखाकृति भी सुन्दर एवं दर्शनीय होगी।

अरोगी सत्यवादी च सम्पद्युक्तो दृढब्रतः।
भरण्यां जायते लोकः सुमुखश्च सुनिश्चितम्।।
जातक दीपिका

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य रोग रहित, सत्यवादी, सम्पत्तिशाली और हठव्रती होता है। उसका मुख सुन्दर होता है। यह सुनिश्चयी होते है।

कभी कभी आप मानसिक तथा शारीरिक रूप से व्याकुलता का अनुभव करेंगी। कठोरता का भाव भी कभी कभी आपके हृदय में निहित रहेगा। साथ ही धन की आपके पास कमी नहीं होगी तथा धन से युक्त होकर जीवन यापन करेंगी।

याम्यर्क्षे विकलोळन्यदारनिरतः क्रूरः कृतघ्नो धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतघ्न एवं धनी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

मेष राशि में जन्म लेने के कारण आप अल्प मात्रा में भोजन करने वाली होंगी तथा अपने भाई बहिनों में श्रेष्ठ होंगी।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपका शरीर ताम्रवर्ण के समान गौरवर्ण का होगा। आखें गोल तथा लालिमा से युक्त होंगी। आपके सिर पर किसी घाव या चोट का निशान होगा।

तथा हाथ एवं पैरों पर कमल के सदृश कान्ति होगी। जल से आप स्वाभाविक रूप से भयभीत रहेंगी। साहस तथा संघर्ष करने की शक्ति नैसर्गिक रूप से आपके अन्दर विद्यमान रहेगी फलतः अपने सारे कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करेंगी। समाज में आप सम्मानित तथा आदरणीया होंगी। बुद्धि आपकी चंचलता से युक्त होगी तथा धन को सम्मान से भी अधिक महत्व प्रदान करेंगी जिससे यदा कदा समस्याओं से उलझना पड़ेगा। सहयोगियों तथा मित्रों का आपके पास अभाव नहीं रहेगा। पुत्रों की संख्या भी पुत्रियों से अधिक ही रहेगी। लेकिन

सर्वसामान्य से आपका व्यवहार स्नेहशील रहेगा। अपनी इसी सद्वृति एवं विनयशीलता के कारण आपको समाज से पूर्ण आदर तथा सम्मान प्राप्त होगा।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चत्रचलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरू र्व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आपको क्रोध शीघ्र आयेगा परन्तु शीघ्र ही आप प्रसन्न भी हो जाएंगी यह आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी। इधर उधर घूमना तथा सैर करना आपको रूचिकर लगेगा। आपकी हथेली में शौर्य सूचक चिन्ह चक्र या पताका आदि भी हो सकते हैं। पुरूषवर्ग में आप प्रिय तथा आदरणीय समझी जाएंगी। अन्य लोगों की सेवा करना तथा उनको सहयोग प्रदान करना आप अपना विशिष्ट कर्तव्य समझेंगी एवं अपनी कठिनाईयां भूलकर आप दूसरों की सहायता करेंगी।

वृताताम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरुः किये।।
बृहज्जातकम्

धन को अनावश्यक महत्व प्रदान करने की प्रवृति से आपके श्रेष्ठ संबंधी असन्तुष्ट होंगे। इस परिस्थिति में या तो आप उनसे अलग हो जाएंगी या वे आपसे अलग हो जाएंगे। चूंकि आपके पति घर के सारे कार्य आपकी पूर्ण सहमति से ही करेंगे अतः इससे भी आपस के वैमनस्य में वृद्धि होगी। साथ ही धन तथा पुत्र से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा अपने वैभव के द्वारा कीर्ति को प्राप्ति करेंगी।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

भ्रमण के लिए आप अगम्य स्थानों का चुनाव करेंगी। सामाजिक सबंधों की विस्तृतता एवं विभिन्नता के कारण आप अवसरानुकूल अभक्ष्य पदार्थो अर्थात् मांस, मदिरा आदि का भी भक्षण करेंगी।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

उग्रता का समावेश आपके स्वभाव में विद्यमान रहेगा। इस उग्रता का जब क्रोध में परिवर्तन होगा तो इससे आप के लिए अनावश्यक परेशानियां होंगी। साथ ही चंचलता भी आपकी प्रवृति में विद्यमान रहेगी अतः समयानुसार आप मिथ्याभाषण भी करेंगी।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोडनृतोक्ति व्रणाङ्कितांङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

यौगिक क्रियाओं में भी आपकी रूचि रहेगी। पित्तकारक या गरमी प्रदान करने वाले पदार्थों का यथाशक्ति अल्प मात्रा में भक्षण करें अन्यथा मस्तिष्क विकार का भी योग बनता है।साथ ही दुर्घटनाओं से भी सुरक्षित रहें।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरुषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः आप धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी। देवता तथा ब्राहमणों की आप खूब सेवा करेंगी तथा इनमें आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी। आपके स्वभाव में अभिमान की झलक भी परिलक्षित होगी। धन की आपके पास कमी नहीं होगी। दयालुता का भाव आपके अर्न्तमन में निहित होगा तथा दीन दुःखियों के प्रति आप दया भाव प्रदर्शित करेंगी। आप एक से अधिक कार्यों अथवा कलाओं में सिद्ध हो सकती हैं। ज्ञानार्जन में भी आपकी गहन रूचि रहेगी। आपका शरीर कान्तियुक्त रहेगा तथा बहुत से लोगों को आप सुख प्रदान करेंगी।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

मान सम्मान से आप सदैव परिपूर्ण रहेंगी तथा आजीवन विपुल धन की स्वामिनी बनेंगी। आप एक अच्छी निशानेबाज भी बन सकती हैं। आपका शरीर गौरवर्ण होगा तथा नगरवासियों को आप वश में रखने वाली होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गजयोनि में जन्म लेने के कारण आप राजा की प्रिय होंगी अर्थात् बड़े बड़े

अधिकारियों तथा मंत्रियों से आपके घनिष्ठ संबंध होंगे तथा वे सब आपका सम्मान करेंगे। आप आत्मबल बाहुबल तथा बुद्धिबल से पूर्ण होंगी। अपने सारे कार्य आप अपने बल पर ही सम्पन्न करेंगी। समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आप उपभोग करने वाली होंगी। आप किसी मंत्री या उच्चाधिकारी की सहयोगिनी या खुद भी उच्चाधिकारी हो सकती हैं। आप अत्यन्त उत्साही होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को उत्साहपूर्वक सम्पन्न करेंगी।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीड़ित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन

में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की तिथियां, मघा नक्षत्र, बवकरण, विष्कुम्भ योग, रविवार,प्रथम प्रहर तथा मेष राशि का चन्द्रमा अनिष्ट फलदायक हैं। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी शुक्ल तथा कृष्ण दोनों पक्षों की तिथियां तथा मघा नक्षत्र में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, साझेदारी लेन देन आदि न करें। शुभ फल की बजाय अशुभ फल ही होंगे। साथ ही रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित करें। इस समय पर शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट श्री हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए तथा सोना, तांबा घी, गेहूं, लाल वस्त्र आदि पदार्थों को दान करना चाहिए। साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के 7 हजार जप करवाने चाहिए। इससे अशुभ फलों में कमी आएगी तथा पूर्ण रूपेण मानसिक शान्ति भी प्राप्त होगी। साथ ही मंगलवार के उपवास भी करने चाहिए।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।